that the much more fundamental principle, namely, that the sanctity of contract should not be violated and the other objection which we have today is that the fundamental, that the pernicious doctrine of legal retrospection should not be brought on to the Statute Book of this country.

With regard to clauses 6 and 7 our objection is that it takes away a very valuable individual right of the trustee without assigning any cause and without giving any valid, objective reasons for this "national interest", whatever "national interest" might mean. Once the principle is accepted that there is such a thing as public interest, whatever may be its content, on the basis which it is permissible to subjugate the individual wholly, and to submerge his rights so as to hand them over to what is euphemistically called the "State" and which in practice is nothing but the ruling party, once this principle is accepted, we shall never see the end of this process and we shall be striking at the very roots of what we in this country have known from ancient times as *dharma*. Our ancient wisdom has told us :

Dharmo rakshah rakshate dharmeshu hanteh hante

'Those who abide by *dharma*, *dharma* protects them; those who disregard *dharma*, *dharma* destroys them.' Mr. Deputy-Speaker, I am aware that *dharma* can also be changed and altered, as the recent history has shown, and as some of my friends on my right in this House hold. But if *dharma* is to be altered, I say that *dharma* should be altered by the means which already stand sanctioned by history. The *dharmas* which are altered by means which are meta-legal, by brute powers that go by the name of 'the law of the jungle'. Dharma should not be altered, *dharma* should not be subverted by constitutional means, by amending a statute and by the legal process. This is my last, though not least, objection to this Bill. With these words, I urge upon this House to reject this Bill wholly and totally.

Some Hon. Members *rose—*

Mr. Deputy-Speaker: There is no time now. The question is:

"That the Bill, as amended, be passed".

The motion was adopted.

17.06 hrs.

C.H.S. AYURVEDIC DISPENSARY NEW DELHI*

श्री यशपाल सिंह (कैराना) : उपाध्यक्ष महोदय, ५ दिसम्बर को मेरे सवाल का जवाब देते हुए माननीय मिनिस्टर साहब ने यह फरमाया कि उन्हें यह पता नहीं है कि मेडिसन का ताल्लुक धर्म के साथ है। अगर मेडिसन का ताल्लुक धर्म के साथ नहीं है, तो किसी चीज़ का भी ताल्लुक धर्म के साथ नहीं हो सकता है, क्योंकि जीवन की सब से इम्पार्टेंट चीज़ औषधि है। अगर जीवन को नापाक कर दिया जाए, तो फिर मनुष्य बेकार हो जाता है। हमारे देहात में और शहरों में करोड़ों आदमी ऐसे हैं, जो कि जलवायु से, सूर्य से, प्राणायाम से, शीर्षासन से सेहत पाते हैं और उन को दवाओं की जरूरत नहीं होती है।

मिनिस्टर साहब से मेरी अर्ज यह है कि मेडिकल और हैल्थ के लिये जो ३४२ करोड़ रुपया थर्ड फाइव-ईयर प्लान में रखा गया है, उस में से ३०० करोड़ रुपये आयुर्वेद के लिये होने चाहियें और सिर्फ ४२ करोड़ रुपये एलोपैथी के लिये होने चाहियें।

दिल्ली में आयुर्वेद की डिस्पेंसरी खोली गई है गोल मार्केट में, जहां सिर्फ १२०० क्वार्टर हैं, जब कि विनय नगर में कई

*Half-an-hour discussion.

[श्री यशपाल सिंह]

डिस्पेंसरी अभी तक कायम नहीं की गई है, जहां ५०,००० के करीब क्वार्टर हैं। दूसरे, इतवार की छुट्टी की वजह से आयुर्वेद को नुक्सान होता है। इतवार को सरकारी कर्मचारियों को दवाइ वगैरह लेने की छुट्टी होती है और इतवार को सरकार उस डिस्पेंसरी को बन्द कर देती है। एलोपैथी की डिस्पेंसरीज बन्द नहीं होती हैं, लेकिन आयुर्वेद की डिस्पेंसरी बन्द कर दी जाती है। इस लिए मेरा साग्रह अनुरोध है कि आयुर्वेद को बराबर का दर्जा दिया जाए। एक दिन की छुट्टी से एक साल का नुक्सान होता है। कब तक इस देश को पांच हजार मील पर बनी हुई दवाओं के सहारे जिन्दा रखा जायेगा? माननीय हैल्थ मिनिस्टर साहब महात्मा गांधी के साथ रही हैं और महात्मा गांधी ने पूरे चालीस साल तक एलोपैथी के खिलाफ प्रचार किया। इस लिये उन को कम से कम यह व्यवस्था जरूर करनी चाहिये कि लोग हिन्दुस्तानी मेडिसन के द्वारा, आयुर्वेद और यूनानी के द्वारा, अपना इलाज करा सकें। अगर गांधी जी के नक्शे-कदम पर चलना है, अगर गांधी जी की बात को मानना है, तो यह जरूर करना चाहिये। दिल्ली में कम से कम पांच डिस्पेंसरीज आयुर्वेद की होनी चाहिए और उन में छुट्टी नहीं होनी चाहिये। उन के आदमी बदले जायें, उन में काम करने वाले वैद्य और अ कम्पाउंडर बदले जायें, लेकिन छुट्टी न हो और अगर वे लोग कहें कि काम ज्यादा हो रहा है, तो उन को ओवर-टाइम एलाउंस दिया जाये, लेकिन एक दिन के लिये भी आयुर्वेद डिस्पेंसरीज को बन्द न किया जाय। अगर गांधी जी का सच्चे मानों में अनुगमन करना है और उस तालीम पर अमल करना है, जो कि उन्होंने देश को दी थी, तो यह जरूरी है कि एलोपैथी को यक-कलम खत्म किया जाए। अमरीका, इंग्लैंड और जर्मनी में, जहां लई कूने, वरनर मकफेडन, विण्टरनिट्स जैसे आदमी पैदा हुए, जहां जुस्ट जैसे महात्मा पैदा हुए, एलोपैथी की किताबों को समुन्दर में फिकवा दिया गया। महात्मा गांधी के कथन को मैं दुबारा आपके सामने दोहरा देना चाहता हूं। उन्होंने एक बार नहीं हजार बार कहा था कि अगर एलोपैथी की दवायें समुन्दर में फिकवा दी जाय तो मानव जाति तो बच जायेगी, मैनकाइंड तो बच जायगा, उसका तो फायदा हो जायेगा मगर नक्सान मछलियों का होगा, वे मर जायेंगी। जिस बोसीदा थ्यूरी को, जिस साइंस को दुनिया ने अपने यहां से निकाल कर फेंक दिया है वही हिन्दुस्तान के ऊपर लादी जा रही है। कोई क्राइटीरिया होना चाहिये मैं तीन क्राइटीरिया पेश करता हूं। पहला यह कि वैद्य और डाक्टर को ले कर देखा जाये कि दोनों में से कौन स्वस्थ है, दोनों में कौन सुन्दर है, दोनों में कौन समर्थ है, कौन अधिक काम करता है। दूसरा यह है कि पार्लियामेंट के जो मैम्बरान हैं, जो आयुर्वेद और एलोपैथी को मानते हैं, उनका कम्पीटीशन जरूर होना चाहिये, स्वास्थ्य में भी होना चाहिये, दौड़ में भी होना चाहिये, विद्या और बुद्धि में भी होना चाहिये। तीसरा यह है कि सौ बीमार उन्हें दिये जायें और सौ बीमार हम को दिये जायें, आधे आधे मरीज हिन्दुस्तान के बांट कर दिये जायें, अगर उन से बहुत ज्यादा को हम लोग जो आयुर्वेद को मानते हैं अच्छा करके न दिखला दें, अगर उन को ज्यादा तादाद में हम स्वस्थ करके न दिखला दें, उनको ठीक करके न दिखला दें, उन से आधे समय में हम इन बीमारों को अच्छा करने न दिखला सकें तो मैं श्रीमान कहता हूं कि हमारे हाथ कटवा दिये जायें। कब तक हम अंधों के पीछे चल करके एक ऐसी फिलोसफी, एक ऐसी साइंस, ऐसी थ्यूरी को जो बिल्कुल सड़ चुकी है गल चुकी है, पैच अप करेंगे। वह पैच अप करने लायक नहीं रह गई है। हिन्दुस्तान में सूर्य की किरणों से, व्यायाम से, आसन से शीर्षासन से, योगासन से और हठयोग से लाखों करोड़ों आदमी अच्छे होने

चाहिये । वे होते थे । यहां यह विद्या आज तक स्कूलों में लागू नहीं की गई है ।

मेरा कहने का मतलब यह है कि अगर भारत की संस्कृति को जिन्दा करना है, अगर हिन्दुस्तान की बढ़ती हुई जरूरतों को पूरा करना है तो वह आयुर्वेद के द्वारा ही हो सकती है । मैं साफ कहता हूं कि यह जो परिवार नियोजन है यह जो गर्भ निरोध चल रहा है, यह जो बर्थ कंट्रोल चल रहा है, यह महात्मा गांधी के कथन के खिलाफ है । यह मेरे धर्म के खिलाफ है, मेरी संस्कृति के खिलाफ है । आयुर्वेद साफ इस बात को कहता है । आयुर्वेद की थ्यूरी इसी चीज पर बेस करती है, आयुर्वेद यहीं से शरू होता है कि साउंड बाडी में कारनल डिजायर पैदा नहीं हो सकती हैं । साउंट बाडी में सिर्फ डिजायर फार ए चाइल्ड ही पैदा होती है । जो साउंड बाडी है, जो स्वस्थ्य शरीर है, जो सुन्दर, सौम्य, भव्य, दिव्य शरीर है, जो सुन्दर बाडी है, जो सौम्य बाडी है, जो साउंड बाडी है जो परफैक्टली हैल्दी बाडी है, उस में कारनल डिजायर्ज पैदा नहीं होती हैं, उस में सिर्फ पुत्रेषणा पैदा होती है, डिजायर फार ए चाइल्ड पैदा होती है । आयुर्वेद का हुक्म यह है । अगर उस हुक्म पर अमल किया जाता, तो बढ़ती हुई आबादी का मसला हल हो जाता । उस का हुक्म है फार दी सेक आफ दी चाइल्ड वंस इन लाइफ, सारी जिन्दगी में केवल एक बार और वह भी सिर्फ पुत्रोत्पत्ति के लिए । चाइल्ड के लिए ही सिर्फ डिजायर पैदा होती है । अगर आयुर्वेद को जारी किया जाता तो यह २५ करोड़ रुपया जो परिवार नियोजन पर खर्च किया जा रहा है, यह न करना पड़ता । यह परिवार नियोजन नहीं है, यह व्यभिचार नियोजन है, यह भ्रष्टाचार नियोजन है । महात्मा गांधी ने इस की जड़ें खोदी थीं । उन्हों ने कहा था कि अगर भारत की संस्कृति को जिन्दा रखना है, तो सब से पहले बर्थ कंट्रोल के सिस्टम को खत्म करना चाहिये । हिन्दुस्तान सैल्फ कंट्रोल के लिए खड़ा है, हिन्दुस्तान खड़ा है ब्रह्मचर्य के लिए, हिन्दुस्तान खड़ा है केवल सन्तानोत्पत्ति के लिए । हमारे आदर्श को मिटा कर के अगर अरबो रुपया भी इस परिवार नियोजन के ऊपर खर्च आप करेंगे तो भी हर्गिज हर्गिज आप को कामयाबी नहीं मिल सकती है । आयुर्वेद की यह आज्ञा है कि सिर्फ सन्तानोत्पत्ति के लिए पुरुष और प्रकृति को सिर्फ जीवन में एक दफा मिलने की इजाजत है । वेद का भी यही कथन है । वह कहता है कि पुरुष और प्रकृति से औलाद पैदा होती है । अथर्ववेद का कहना है ।

अभिक्रन्दन स्तनयन ग्रहण: शितिंगो
वृहच्छेया नुभूमो जभार ।

अथर्व वेद सब से बड़ा ग्रन्थ है । इस का मतलब है सेल्फ कंट्रोल के तरीके से जोकि महात्मा गांधी भी कहते थे, अगर औलाद पैदा की जाती है, तो उस की आवाज में बादल जैसी गरज होती है, उस के पुट्ठों के अन्दर शेर जैसी शक्ति होती है, उस के मुखमंडल पर सूरज जैसा तेज होता है, उस की बाहुओं के अन्दर देशभक्ति का बल होता है, उस के मस्तिष्क के अन्दर अकाल पुरुष की दी हुई स्मृति और अकाल पुरुष की दी हुई प्रतिभा होती है । सिवाय आयुर्वेद के और कोई ऐसा उपाय नहीं है जोकि आज की बढ़ती हुई आबादी के मसले को हल कर सके । हमारे चौबीस हजार वेद मंत्रों में, हमारी गीता में कहीं भी जिसे क्युपिड कहते हैं, इस की कल्पना नहीं है, कारनल डिजायर्ज की कल्पना नहीं है । जीवन में केवल एक बार गृहस्थ करने का उपदेश है ।

आयुर्वेद तभी जिन्दा होगा जबकि सरकार उस को प्रोटैक्शन देगी । सरकार आयुर्वेद के साथ भिन्न ट्रीटमेंट कर रही है, स्टेप मदरली ट्रीटमेंट कर रही है, ऐसा ट्रीटमेंट कर रही है जैसा हरिजनों के साथ, पिछड़े

[श्री यशपाल सिंह]

हुए लोगों के साथ, महिलाओं के साथ, किसानों और मजदूरों के साथ किया जा रहा है। मैं साफ कहता हूं कि अगर हिन्दुस्तान की कल्चर को जिन्दा रखना है तो आयुर्वेद को जिन्दा रखना होगा।

गुलाम की पहचान क्या है। उस की पहचान सिर्फ है, परभाषा, परभाव, पर-औषध, पर-परिधान। उस की दवा दूसरे देश की होती है, पोशाक दूसरे देश की होती है, जबान दूसरे देश की होती है, भाव दूसरे देश के होते है, रहन सहन दूसरे देश का होता है। परभाषा, पर-भाव, पर-औषध, पर-परिधान, पराधीन जन की है यह पूरी पहचान।

अब मैं उन के लफ्जों में कुछ पढ़ कर आप को सुनाना चाहता हूं जिन्हों ने ऊंची से ऊंची आयोरिटी हासिल की है, चालीस चालीस साल तक प्रेक्टिस करने के बाद इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि ये जो दवायें हैं, ये जो इंजेक्शन दिये जाते है, ये बीमारी को दबाते हैं, ये चोर को निकालते नहीं हैं, बल्कि चोर का दरवाजा बन्द करते हैं जिस से चोर एक जगह नहीं हजार जगह नुक्सान पहुंचा सके। उन्हीं के लफ्जों में जिन्हों ने ४०–४० साल तक एलोपैथी की ऊंची से ऊंची तालीम पाई थी, कहना चाहता हूं :—

"But if the body's attempts to thus rid itself of its imposed burden are continually thwarted by the suppressive methods of treatment in vogue at the present time, the waste materials in question which, as has been explained, are always acid in character are thrown back into the tissues and thus pave the way for the whole melancholy catalogue of diseases, from bronchitis and heart diseases, down to cancer and paralysis"

ब्रंकाइटिस से ले कर आखिर में हार्ट ट्रबल्ज तक इन दवाओं से पैदा होता है।

मेरे कहने का मतलब यह है कि ये दवा बेकार हो चुकी हैं और यह उन लोगों का मत है जिन्हों ने चालीस चालीस साल तक आयुर्वेद को देखा है। आयुर्वेद की एक पैसे की दवाई उतना आराम कर सकती है जितना कि एलोपैथी की एक लाख रुपये की आराम नहीं कर सकती हैं। उन्हों ने किताबों को निकाल निकाल कर फेंका है। महात्मा गांधी से बढ़ कर के और कोई आदर्श इस का नहीं हो सकता है। अगर उन का नाम लिया जाता है तो एलोपैथी को एक कलम खत्म करना होगा और उस के स्थान पर जो हमारा आयुर्वेद है, यूनानी सिस्टम है उन को कायम करना होगा।

मैं यह भी कहना चाहता हूं कि दिल्ली के अन्दर पांच आयुर्वेद डिसपेंसरीज की जरूरत है। सरकार का फर्ज है कि ज्यादा से ज्यादा इस के लिए रुपया मंजूर करे। चांदनी चौक में, विनय नगर में, रामाकृष्ण पुरम् में, नई दिल्ली के उन इलाकों में जहां सरकारी कर्मचारी रहते हैं, उन को मौका दिया जाय कि वे आयुर्वेद से अच्छे हो सकें और आयुर्वेद से लाभ उठा सकें। कोई न कोई स्कीम मंत्री महोदय ऐसी जरूर बतलायें जिस से भारत का गिरता हुआ स्वास्थ्य उन्नत हो।

आपका जो हैल्थ डिपार्टमेंट है इसका मतलब यह नहीं है कि यह ट्रीटमेंट डिपार्टमेंट है, चिकित्सा डिपार्टमेंट नहीं है। चिकित्सा डिपार्टमेंट और है और हेल्थ डिपार्टमेंट और है। यह हमारे लिए बड़े शर्म की बात है कि अस्पताल बढ़ते जा रहे हैं। अगर हम लोग आयुर्वेद के मुताबिक अपने जीवन को निभाते तो अस्पताल खत्म हो जाते। अस्पताल बढ़ने का मतलब क्या है। इसका मतलब यह है कि बीमार बढ़ते जा रहे हैं। यह ३ अरब ४२ करोड़ रुपया जो है इसका मतलब क्या है। इसका मतलब यह है कि बीमार

बढ़ते जा रहे हैं । मैं चाहता हूं कि इन दो डिपार्टमेंट्स को अलग अलग किया जाए और जो तीन क्राइटेरिया मैंने दिये हैं, उन तीन क्राइटेरिया को आजमाया जाए । ये क्राइटेरिया जब तक हिन्दुस्तान के ४४ करोड़ इंसानों के सामने नहीं आयेंगे तब तक भले का और बरे का पता नहीं चलेगा । अगर आग में ने डाला जाये तो सोने और मुलम्मे का पता कैसे लग सकता है । बनावटी सोना आग में पड़ कर काला हो जायेगा और असली सोना आग में पड़ कर निर्मल होगा उज्ज्वल होगा, चमकीला होगा । इसलिये मेरी दरख्वास्त है कि दिल्ली के अन्दर कम से कम पांच आयुर्वेदिक डिस्पेंसरी का ऐलान किया जाय और ३०० करोड़ रुपया आयुर्वेदिक पद्धति के लिये न । ४२ करोड़ रुपया ऐलोपैथिक पद्धति की उन्नति के लिये रक्खा जाये ।

Shri B. K. Das (Contai): In view of the fact that there is only one Ayurvedic dispensary in New Delhi, may I know whether it is possible that a Government servant, irrespective of the area or the dispensary allotted to him, can have the advantage of having treatment in this Ayurvedic dispensary?

Shri D. C. Sharma: May I know whether the Ministry has any plan for the progressive increase in the number of Ayurvedic dispensaries, not only under the CHS but also under the other schemes, not only in Delhi but in other parts of India also?

The Minister of Health (Dr. Sushila Nayar): Mr. Deputy-Speaker, Sir...

श्री यशपाल सिंह : हिन्दी में उत्तर दीजिये ।

डा० सुशीला नायर : उपाध्यक्ष महोदय, आपको देख कर मुझे अंग्रेजी का ध्यान आ गया हालांकि माननीय सदस्य को देख कर मुझे हिन्दी का ही ध्यान आना चाहिये ।

Shri Nambiar (Tiruchirapalli): The hon. Minister may speak in English so that we may aslo be able to follow.

डा० सुशीला नायर : उपाध्यक्ष महोदय, मैंने बहुत ध्यान से माननीय सदस्य का भावना से भरा भाषण सुना । उनके भाषण का जवाब देने से पहले जो दो छोटे छोटे सवाल पूछे गये हैं, मैं उनका जवाब दे दूं । पहला सवाल करने वाले माननीय सदस्य बहुत बड़े हैं लेकिन जैसा उन्होंने बड़े लोग करते हैं अपना सवाल बहुत थोड़े से शब्दों में रख दिया । उसका जवाब भी थोड़े से शब्दों में दे दूंगी । जिन माननीय सदस्य ने यह बहस उठाई उन्होंने भाषण तो लम्बा दिया लेकिन उसमें सवाल कोई बहुत ज्यादा नहीं थे । इसलिये उस भाषण को मैं बाद में लूंगी ।

पहले तो यह पूछा गया है कि जो आयुर्वेदिक डिस्पेन्सरीज है उससे दूसरे इलाके के लोग क्या लाभ उठा सकते हैं । मेरा जवाब है, जी हां, उठा सकते हैं । सब दूसरी डिस्पेसरी से लोग आयुर्वेदिक डिस्पेंसरी में आ सकते हैं और आते हैं । लेकिन अपनी डिस्पेन्सरी के डाक्टर की चिट से आते हैं ताकि ऐसा न हो कि वे दो जगहों पर एक वक्त में इलाज कराते जायें, जो कि मनासिब नहीं होगा ।

दूसरा सवाल था कि आयुवदिक डिस्पेन्सरीज को बढ़ाने में क्या इरादा है और वे खाली सरकारी बीमा योजना के नीचे ही खुलेंगी या अन्य जगहों पर भी । भारत सरकार तो सरकारी बीमा योजना ही चला रही है और उसके नीचे जो आवश्यकता होती है उसके मताबिक डिस्पेन्सरी खोलने की बात सोची जो सकती है । बाकी हिन्दुस्तान में राज्य सरकारें स्वास्थ्य की देख भाल करती हैं और कई जगहों पर उन्होंने आयवदिक डिस्पेन्सरीज खोली हैं । कई जगहों पर उन्हें उनको बन्द करना पड़ा है । बहुत से देहातों में तो आज देहाती नाराज होते हैं जब उनसे कहा जाता है कि तुम्हारे लिये

[डा० सुशीला नायर]

आयुर्वेदिक डिस्पेन्सरी खोली जायेगी या तुम्हारे लिये बेसिक स्कूल खोले जायेंगे । वे कहते हैं कि अगर हम शहरों में बाकायदा आधुनिक दवाखाने खोलते हैं तो उनके लिये क्यों आयुर्वेदिक डिस्पेन्सरी खोलते है. हम शहरों में आधुनिक ढंग के स्कूल खोलते हैं तो उनके बच्चों के लिये क्यों बेसिक स्कूल खोलते हैं । हम उनको समझा नहीं सकते हैं कि उनके लिये यह चीज ज्यादा अच्छी है जब तक हम बाकी देश में भी इन चीजों को सब के लिये अच्छा समझ कर न चलायें । माननीय सदस्य कहेंगे कि हमने एक आयुर्वेदिक दवाखाना खोला और उसका बहुत स्वागत हुआ, यह बतलाता है कि आयुर्वदिक दवा सबके लिये अच्छी है । हमने शुरू में जब यह दवाखाना खोला और उसमें जो लोग आये उनको देख कर हमने यह विचार किया था कि ऐसा दवाखाना आयुर्वेद का हम विनय नगर में भी खोल देंगे जहां पर बहुत सरकारी नौकर रहते हैं । लेकिन जैसा उस दिन मैंने इसी सवाल के जवाब में भी कहा था चन्द महीनों में मरीजों की संख्या गिरने लगी है और उस गिरती हुई संख्या को देख कर हमें फिर विचार करना पड़ा कि हम अभी इसको बढ़ायें यान बढ़ायें । हमने सोचा क्यों न इसको थोड़ा सा और देख लिया जाये । अभी मुझे इतना ही कहना है कि जो हमारी ग्राम आधुनिक डिस्पेन्सरीज हैं सारी दिल्ली भर में उन में हर रोज मरीजों की संख्या ५०० से लेकर १२०० तक है और एक डाक्टर रोज जितने मरीज देखता है उनकी औसत संख्या १२० है । आयुर्वेदिक डिस्पेन्सरीज में पहले तो रोजाना औसत २०० तक गया लेकिन अब औसत है १४६, १४१ और १३६ । इस तरह से उनकी हर रोज की संख्या हमारे सामने है । सब डिस्पेन्सरीज से लोग वहां जाते हैं तो भी जैसा मैंने आपसे बतलाया औसत संख्या मरीजों की इतनी कम है । तो भी अगर मरीजों ने ज्यादा दिलचस्पी दिखाई, ज्यादा लोग आयुर्वेदिक डिस्पेन्सरी की दवाओं से लाभ लेना चाहेंगे, तो हमारा विचार है कि हम विनय नगर में एक और डिस्पेन्सरी खोलें । पांच डिस्पेन्सरी खोलने का इस वक्त हमारा कोई इरादा नहीं है ।

जिन माननीय सदस्य ने यह वादविवाद उठाया उन्हों ने बहुत कुछ कहा और उस में उन का बार बार दोहराया हुआ नारा भी था कि ३४२ करोड़ में से ३०० करोड़ तो दे देना चाहिये आयुर्वेदिक पद्धति को और ४२ करोड़ रख देना चाहिये ऐलोपैथिक पद्धति के लिये, आधनिक पद्धति के लिये । इसी के साथ साथ उन्होंने यह भी कहा कि आयर्वेद की एक पैसे की दवा ऐलोपैथिक कीएक लाख रुपये की दवा के बराबर है । इस तरह से एक और एक लाख का रेशियो तो सीधे सीधे हो गया । अगर एक रुपया दिया जाये आयर्वेद को तो एक लाख रुपया देना होगा, ऐलोपैथिक को । यह भी उन को अपने हिसाब के अनुसार, मेरे हिसाब के अनुसार नहीं ।

श्री यशपाल सिंह : वह खत्म हो चुका है

डा० सुशीला नायर : मैं ने माननीय सदस्य को बिल्कुल डिस्टर्ब नहीं किया, बड़े ध्यान से सुना, अब वे मेरी भी बात सुन लें थोड़ी सी ।

फिर उन्हों ने कहा कि ५००० मील से समुद्र पार से जो दवाई लाई जाती है उस से हमारा कब तक गुजारा चलेगा । मैं माननीय सदस्य से बहुत अदब से यह बतलाना चाहती हूं कि ५००० मील दूर से हम दवा नहीं ला रहे हैं अधिकतर दवायें तो हम अपने ही देश में बना रहे हैं और उन दवाओं को शोध में भी कई एक अनुसन्धान हमारे लोगों ने किये हैं । बहुत से दूसरे देश के लोगों ने भी किये हैं लेकिन हम लोग भी इस अनु-सन्धान में अब हिस्सेदार होने लगे हैं, कई दवायें हमारी ही हैं । मैं यह भी माननीय सदस्य

को बतला दूं कि कई एक आयुर्वेद की दवाओं को, जिन का इस्तेमाल हमारे बुजुर्गवार किया करते थे, आज के वैज्ञानिकों ने छान बीन कर के, अनालिसिस कर के, उन में से बहुत अच्छी अच्छी दवायें निकाल ली हैं। वे इस्तेमाल हो रही हैं आधुनिक इलाज के तरीके में।

फिर आप ने यह कहा कि एम० पीज० का मुकाबला हो, डाक्टर वैद्यों का मुकाबला हो। तो अगर एम० पीज आपस में दौड़ लगाने की इच्छा प्रकट करें और हम से उस का इन्तजाम करने को कहें तो हम बड़ी खुशी से रस्सा वगैरह लगवा देंगे, दौड़ वे लगा लें बड़ी खुशी से। उस के बाद उन्हों ने कहा कि १०० मरीज उन को दिये जायें और १०० मरीज दूसरी तरफ दिये जायें। यह हमारे बस की बात नहीं है, हम जबर्दस्ती तो मरीजों से नहीं कह सकते क वे इधर जायें या इधर जायें। जितने आयें आप बड़ी खुशी से उन्हें लीजिये।

फिर माननीय सदस्य ने बहुत जोर से फैमिली प्लानिंग के बारे में अपने विचार व्यक्त किये और परिवार नियोजन के लिये आत्म संयम की बात कही। मैं माननीय सदस्य के साथ सौ फीसदी सहमत हूं कि सब से अच्छा तरीका फैमिली प्लानिंग का आत्म संयम का है। अगर माननीय सदस्य मुझे यह सिद्ध कर के कि आयुर्वेद की दवा खाने वालों या आयुर्वेद को मानने वालों के घर में एक एक ही सन्तान है तो मैं आयुर्वेद के तरीके से फैमिली प्लानिंग के प्रचार के लिए जितना पैसा माननीय सदस्य चाहेंगे देने के लिये सहमत हो जाऊंगी। लेकिन जहां तक मुझे मालूम है आयुर्वेद वालों के घर में भी बहुत से बच्चे हैं, दूसरों के घरों में भी बहुत से बच्चे हैं।

आयुर्वेद की दवा खाने वालों को काम वासना नहीं होती, यह एक नई बात माननीय सदस्य बता रहे हैं। अभी तक मैं ने कहीं यह बात नहीं सुनी थी। लेकिन जहां तक आत्म संयम का सवाल है, बहुत ज्यादा लोग यह रास्ता अख्तियार नहीं करते और हमारे पास कोई ऐसा तरीका नहीं है जिस से हम उन को मजबूर कर सकें कि वह अपने कुटम्बों को छोटा रखें और उस के लिये संयम को अपने जीवन में महत्व का स्थान दें। ऐसी अवस्था में कोई और रास्ता ढूंढना पड़ता है।

मैं माननीय सदस्य को बहुत अदब से यह भी बता दूं कि हम कई जगह पर हम यह रिसर्च कर रहे हैं, कि कोई जड़ी बूटी अपने यहां की कहीं से मिल जाए जिस से कि जो बढ़ती हुई आबादी है वह, गोली खाने से, कुछ कम की जा सके लेकिन अभी तक ऐसी जड़ी बूटी हम लोगों को मिली नहीं है। मैं इंडोनीशिया गई थी, वहां किसी ने बताया कि एक जड़ी है। उस को भी प्राप्त कर के देखने की कोशिश की, लेकिन अभी तक उस में सफलता नहीं मिली है। अगर हम को कोई ऐसी जड़ी बूटी मिलेगी तो हम बड़ी खुशी से आयुर्वेद की तरफ उस जड़ी बूटी को अपने देश में इस्तेमाल करेंगे इतना ही नहीं, हम सारी दुनिया में उस का प्रचार करेंगे और बड़ी खुशी से सब जगह लोग उस का इस्तेमाल करेंगे।

लेकिन आज जब आबादी इतनी तेजी से बढ़ रही है कि हमारे देश की आर्थिक और सब प्रकार की तरक्की में बाधक बन रही है, तब आवश्यक हो जाता है कि हम किसी भी तरीके से इस बढ़ती हुई आबादी को काबू में ला सकते हैं, इस वृद्धि को कम कर सकते हैं, वह हम को करना चाहिये।

माननीय सदस्य ने कहा कि स्वास्थ्य की तरफ ध्यान देना चाहिये। हम स्वास्थ्य की की तरफ ध्यान दे रहे हैं, बीमारियों को इस देश से निकालने की कोशिश कर रहे हैं और लाखों लोग जो बीमारियों के शिकार हो कर मर जाते थे हर साल उन को बचा रहे

[डा० सुशीला नायर]

हैं। मलेरिया से ही २० लाख मृत्युयें होती थीं, वे समाप्त हो गयी। चेचक से जो लाखों लोग मरते थे उन की संख्या हजारों में आ गयी है। यह भी नहीं रहेगी। इसी प्रकार हम दूसरे रोगों पर काबू पाने की कोशिश कर रहे हैं। तो इस से जाहिर है कि मृत्यु संख्या कम होती जा रही है। लेकिन अगर जन्म की संख्या बराबर रही तो आबादी और भी तेजी से बढ़ेगी, जिस से कि हमारे देश की तरक्की में बहुत बड़ी रुकावट आयेगी। इसलिये इस काम को हमारी सरकार ने बहुत महत्व दिया है और इस समय इसके लिये एक पापुलेशन काऊंसिल दिल्ली में बैठी है इन्हीं चीजों पर विचार करने के लिये।

इन शब्दों के साथ मैं माननीय सदस्य को फिर से यह आश्वासन देना चाहती हूं कि आयुर्वेद की जिस हद तक हमारे गवर्नमेंट सर्वेन्ट्स और एम० पी० आदि की, जो कि सरकारी स्वास्थ्य बीमा योजना से लाभ उठाते हैं, मांग होगी। उस हद तक हम उस मांग को पूरा करने की कोशिश करेंगे।

17.35 hrs.

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on Tuesday, December 17, 1963/Agrahayana 26, 1885 (Saka).